हिन्दी शिक्षण में पाठ योजना की आवश्यकता व महत्व

रेनू

व्याख्याता

मोहन लाल साहेवाल स्मृति इंस्टीटयूशन (बी.एड. कॉलेज) नोहर

सामान्य सारांश

किसी भी कार्य के उद्देश्य तथा सफलता प्राप्त करने के लिए उस कार्य संबंधी योजना का निर्माण करना आवश्यक होता है। योजना की अनुपस्थिति में कार्य तथा उसके उद्देश्य दोनों ही पूर्ण नहीं हो पाते है। शिक्षा पर भी यही अटूट नियम लागू होता है। शिक्षक को भी कक्षा में शिक्षण कार्य करवाने के लिए पाठ योजना निर्मित करनी होती है। पाठ योजना के अभाव में कोई भी शिक्षक कक्षा में भली–भांति कार्य नहीं कर सकता। शिक्षण को रूचिकर तथा सफल बनाने के लिए एक शिक्षक के लिए पाठ योजना निर्मित करना आवश्यक होता है। अच्छी तरह से निर्मित की गई पाठ योजना शिक्षक तथा छात्राों के लिए उपयोगी सिद्ध होती है।

कुंजी शब्दः- पाठ योजना, तुलना तथा समरूपता, सामान्यीकरण, आवश्यकता एवं महत्व

हिन्दी शिक्षण में पाठ योजना

अध्यापक कक्षा में शिक्षण कार्य करने के लिए विषय वस्तु की जिस रूप–रेखा को निर्मित करता है। उसे पाठ योजना कहते है। अध्यापक अपने शिक्षण कार्य को सफल बनाने तथा छात्रों के हितों को ध्यान में रखकर कक्षा में पढ़ाई जाने वाली पाठ्य वस्तु अथवा विवाद को छोटी–छोटी इकाईयों में विभाजित कर देती है। इससे अध्यापक को निर्धारित समय में इन इकाईयों को पढ़ाने में सुविधा होती है। इसलिए भावी अध्यापकों को उनके शिक्षण प्रशिक्षण के समय पाठ योजना निर्मित करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है।

डेविस के अनुसार ''कक्षा–कक्ष में प्रवेश करने से पहले 'अध्यचापक को पूरी तैयारी कर लेनी चाहिए। ''

पाठ योजना का स्वरूपः–

पाठ योजना की रूप रेखा के संबंध में ब्लूम, हरबट आदि विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए है। किन्तु वास्तव में हरबर्ट के विचार ही सर्वमान्य है। उन्होंने पाठ योजना में पांच सोपानों की प्रणाली को प्रस्तुत किया है।

1. **योजना** :–

इसके अंतर्गत अध्यापक एकक योजना का निर्माण करता है जिसमें वह यह निर्धारित करता है कि विषय को क्रमबद्ध कैसे करना है और छात्रों के बौद्धिक स्तर के अनुरूप किस प्रकार शिक्षण कार्य करना है, जिससे शिक्षण कार्य में कोई त्रुटि न हो।

2. **प्रस्तुतीकरण** :–

प्रस्तुतीकरण में अध्यापक अपने पूर्व अनुभव तथा पूर्व संचित ज्ञान के पाठ्य सामग्री के अनुरूप नए पाठ की प्रस्तावना प्रस्तुत करता है। यह प्रस्तुतीकरण या तो बोध –प्रश्नों के द्वारा किया जा सकता है या फिर विकासात्मक प्रश्नों के द्वारा।

3. **तुलना तथा समरूपता** :–

इसके अन्तर्गत अध्यापक छात्रों द्वारा पूर्व संचति ज्ञान अनुभव तथा नए पाठ की विषय–वस्तु से तुलना करवाता है और उन दोनों में समानता तलाश करवाता है।

4. **सामान्यीकरण** :–

इसके अंतर्गत कक्षा में छात्र पूर्व ज्ञान तथा नए विषय के तथ्यों में अधिक से अधिक समानता तलाश करके एक सामान्य नियम निकालने का प्रयास करते हैं।

5. **प्रयोग** :–

इसके अंतर्गत अध्यापक कक्षा में छात्रों के समक्ष ऐसे प्रश्न रखता है जिससे छात्र सीखे हुए नए ज्ञान का प्रयोग करने में हो सकें।

पाठ योजना की आवश्यकता एवं महत्व

1. पाठ योजना उत्तम शिक्षण में सहायक है।
2. इससे समय की बचत होती है।
3. इससे शिक्षक के आत्म विश्वास में वृद्धि होती है।
4. इससे शिक्षण कार्य विधिवत सम्पन्न किया जा सकता है।
5. पाठ योजना शिक्षण को सहज, सार्थक, सशक्त और प्रभावपूर्ण बनाने में बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होती है।
6. पाठ योजना शिक्षक को व्यवस्थित और नियमित रूप से कार्य करने की ओर प्रेरित करती है।
7. इसके माध्यम से शिक्षण को दोष रहित बनाया जा सकता है।
8. पाठ योजना के होने से शिक्षक शिक्षण के लिए अनुकूल वातावरण बना सकते हैं।
9. इससे शिक्षक की चिंतन शक्ति का विकास होता है।

10. शिक्षक अच्छी शिक्षण विधियों के चयन के लिए निर्णय ले सकता है।
11. इसकी सहायता से शिक्षक पाठ को संतुलित एवं व्यवसिति रूप में प्रस्तुत करने में सफल होती है।
12. पाठ योजना का शिक्षण से पूर्व निर्माण किया जाता है। इसलिए शिक्षक ऐसी सहायता सामग्री को जुटा कसती है। जिसके माध्यम से पाठ को रोचक और प्रभावपूर्ण बनाया जा सकता है।
13. इसके द्वारा व्यक्तिगत विभिन्नताओं पर ध्यान दिया जा सकता है।
14. पाठ योजना के माध्यम से ही शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति की जा सकती है।
15. पाठ योजना के माध्यम से शैक्षिक मूल्यांकन सही ढंग से किया जा सकता है।
16. यह कक्षा में अनुशासन बनाए रखने में सहायक है।
17. पाठ के सभी महत्वपूर्ण पक्षों पर प्रश्न पूछे जा सकते हैं।
18. इसके माध्यम से शिक्षण क्रमबद्धता और सुव्यस्थित ढंग से किया जा सकता है।
19. इसके बनाने से शिक्षक शिक्षण में आने वाली कठिनाईयों को पहले जान लेता है। इसलिए वह पहले से इसका प्रबंध कर लेता है।
20. पाठ योजना परम्परागत शिक्षण की कमियों को दूर करता है।
21. शिक्षक के लिए पाठ्य–वस्तु का पढ़ाना सहज और सरल हो जाता है और विद्यार्थियों को कठिन बातों की आसानी से समझ आ जाती है।
22. पाठ योजना पाठ्य विषय–वस्तु के लक्ष्यों को निश्चित करने और उन्हें प्राप्त करने में सहायक होती है।
23. पाठ योजना असंगतता, तर्कहीनता, क्रमहीनता आदि शिक्षण की त्रुटियों कोसमाप्त करके तर्कबद्धता, सार्थकता, क्रमबद्धता बनाए रखने में सहायक होती है।
24. पाठ योजना कक्षा में सीखने – सिखाने की प्रक्रिया के मूल्यांकन करने में भी विशेष भूमिका निभाती है।
25. पाठ योजना एक अध्यापक में आत्म–विश्वास, धैर्य, संयम, परिश्रम करने की आदत आदि गुणों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
26. पाठ योजनाके द्वक्षरा अध्यापक अपने शिक्षण कार्य को अधिक कुशलता के साथ प्रस्तुत करने में सक्षम होती है।
27. पाठ योजना के बनाने में अध्यापक शिक्षण एवं पाठ्य विषय–वस्तु से संबंधित सभी पक्षों पर उचित निर्णय ले सकता है।

28. पाठ–योजना अध्यापक और विद्यार्थी दोनों के लिए लाभकरी होती है। अध्यापक को तो पाठ योजना के द्वारा शिक्षण कार्य में सुविधा होती है और विद्यार्थियों को पाठ्य वस्तु को समझने में आसानी होती है। इसलिए प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में अध्यापक और विद्यार्थी दोनों ही लनाभान्वित होते है।

29. किसी भी पाठ को पढ़ाने के लिए शिक्षक को अध्ययचन सामग्री की आवश्यकता होती है। पाठ–योजना शिक्षक को अध्ययन सामग्री के संगठन में सहायता करती है।

30. पाठ–योजना की आवश्यकता एवं महत्व इस लिए भी है क्योंकि इससे शिक्षकों को उपविषय से संबंधित शिक्षण विधि को चयन करने का भी अवसर मिलीता है।

31. पाठ योजना शिक्षक द्वारा किया गया कक्षा में पूर्व का परिश्रम है। वह योजना बनाते समय अपने संपूर्ण ज्ञान का प्रयोग करता है। ऐसा करने से निश्चित रूप से योजना में संपूर्णत एवं प्रभावशीलता के गुण सम्मिलत होते है।

32. पाठ–योजना की सहायता से कक्षा में शिक्षण का संपूर्ण वातावरण बनता है क्योंकि शिक्षक द्वारा पहीले से ही अपने उपविषय को योजना तैयार की होती है। उसका कार्य केवल कक्षा में उस पाठ को श्रेष्ठ ढंग से पढ़ाने का ही रह जाता है। इससे शिक्षण कायर्च प्रभावशाली ढ़ंग से होता है।

33. पाठ–योजना शिक्षण सूत्रों जैसे सरल से जटिल की ओर मूर्त से अमूर्त तथा परिचित से अपरिचित आदि पर आधारित है।

34.' पाठ योजना की सहायता से शिक्षक विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान की जांच कर लेता है तथा उसको पाठ का विकास करने में आसानी होती है।

35. शिक्षक बच्चों का मार्गदर्शक होता है लेकिन पाठ योजना शिक्षक के मार्ग दर्शक के रूप में कार्य करती है।

36. पाठ–योजना की सहायता से शिक्षक विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान की जांच कर लेता है तथा उसको पाठ का विकास करने से आसानी हो जाती है।

37. पाठ–योजना की आवश्यकता एवं महत्व का मुख्य कारण यह भी है कि इससे विद्यार्थियों की विषय पर पकड़ मजबूत होती है।

38. पाठ योजना बनाते समय शिक्षक यह भी निर्धारित कर लिया है कि उसने शिक्षण के दौरान क्या–क्या करना है तथा विद्यार्थी उसकी क्रियाओं के प्रति क्या प्रतिक्रियाएं करेंगे। इस प्रकार शिक्षण में शिक्षक तथा विद्यार्थियों का आपसी सहयोगब बनता है।

39. पाठ योजना बनाते समय शिक्षक विभिन्न तथ्यों को ध्यान में रखता है, जैसे व्यक्ति – मिलता, विषय की जटिलता आदि। इन बातों पर पाठ–योजना की तैयारी में विशेष ध्यान

दिया जाता है। शिक्षण कक्षा में जब उपविषय को पढ़ा रहा होता है तो उसको विद्यार्थियों की समस्याओं का पूर्ण ज्ञान होता है।

40. मूल्यांकन का शिक्षण में विशेष महत्व है क्योंकि शिक्षक द्वारा जो कुछ भी पढ़ाया जाता है। उसका लगातार मूल्यांकन आवश्यक है। पाठ–योजना में दोहराई की भी व्यवस्था होती है, जिससे शिक्षक पाठ पढ़ाने के प्श्चात उनका प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन करता है।

41. पाठ–योजना पढ़ाए गए पाठ का सार प्रस्तुत करती है तथा इसमें कक्षा में दिए जाने वाले कार्य का निश्चित प्रबंध होता है जो स्वः योजना व समझ को विकसित करता है।

निष्कर्ष:–

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि शिक्षण की सफलता मुख्यतः पाठ योजना पर निर्भर करती है। यदि शिक्षक किसी विषय की पाठ–योजना तैयार नहीं करता तो वह विषय के साथ न्याय नहीं करता। कुल मिलकर कहा जा सकता है कि शिक्षण की सफलता के लिए पाठ योजना की अधिक आवश्यकता एवं महत्व है।

संदर्भ सूची

कौल, लोकेश. (2005). शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0 लि0, नई दिल्ली

चतुर्वेदी शिखा. (2005). भाषा एवं साहित्य शिक्षण, मेरठ : सूर्या पब्लिशिंग, मेरठ

तिवारी, डॉ भोलानाथ. (2005). हिन्दी भाषा इलाहाबादः किताब महल, 22 – ए सरोजनी नायडू मार्ग.

दास, श्याम सुन्दर. (1957). भाषा विज्ञान, इलाबाद : इंडियन प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद.

पाण्डेय, रामशकल. (2003). हिन्दी शिक्षण आगराःविनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.

वर्मा, रामचन्द्र. (1999). व्यवहारिक हिन्दी व्याकरण. दिल्लीः प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

शर्मा, आर.ए. (2003). शिक्षा अनुसंधान. मेरठ सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ

शर्मा. डॉ. कृष्ण (1980–81). हिन्दी शिक्षण विधि. आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर आगरा.

सिंह सावित्री. (1983). हिन्दी शिक्षण, मेरठ : लायल बुक डिपो, मेरठ

सूद, विजय. (1961). हिन्दी शिक्षण विधियाँ, लुधियाना : टंडन पब्लिकेशन, लुधियाना.